सब एक ही साथ में

① गेस्टाल्ट
② समग्रवादी
③ पूर्ण से अंश की ओर का सिद्धान्त
④ तात्कालिक स्थान का सिद्धान्त
⑤ अंतर्दृष्टि का सिद्धान्त

THURSDAY
26 APRIL

2018 MARCH

शिक्षा में सूझ सिद्धान्त का महत्व :—

1. सूझ के द्वारा बालक अपनी समस्या के विषय में सोचता है और सूझ के द्वारा समाधान खोजता है।
2. बालकों समस्या को स्वयं लड़ने का साहस उभरता है।
3. सीखने की प्रकृति संरचनात्मक होती है।
4. सीखना अचानक होता है।
5. सीखना पूर्ण से अंश की ओर होता।
6. यह रटन्त शिक्षा को नकारता है।

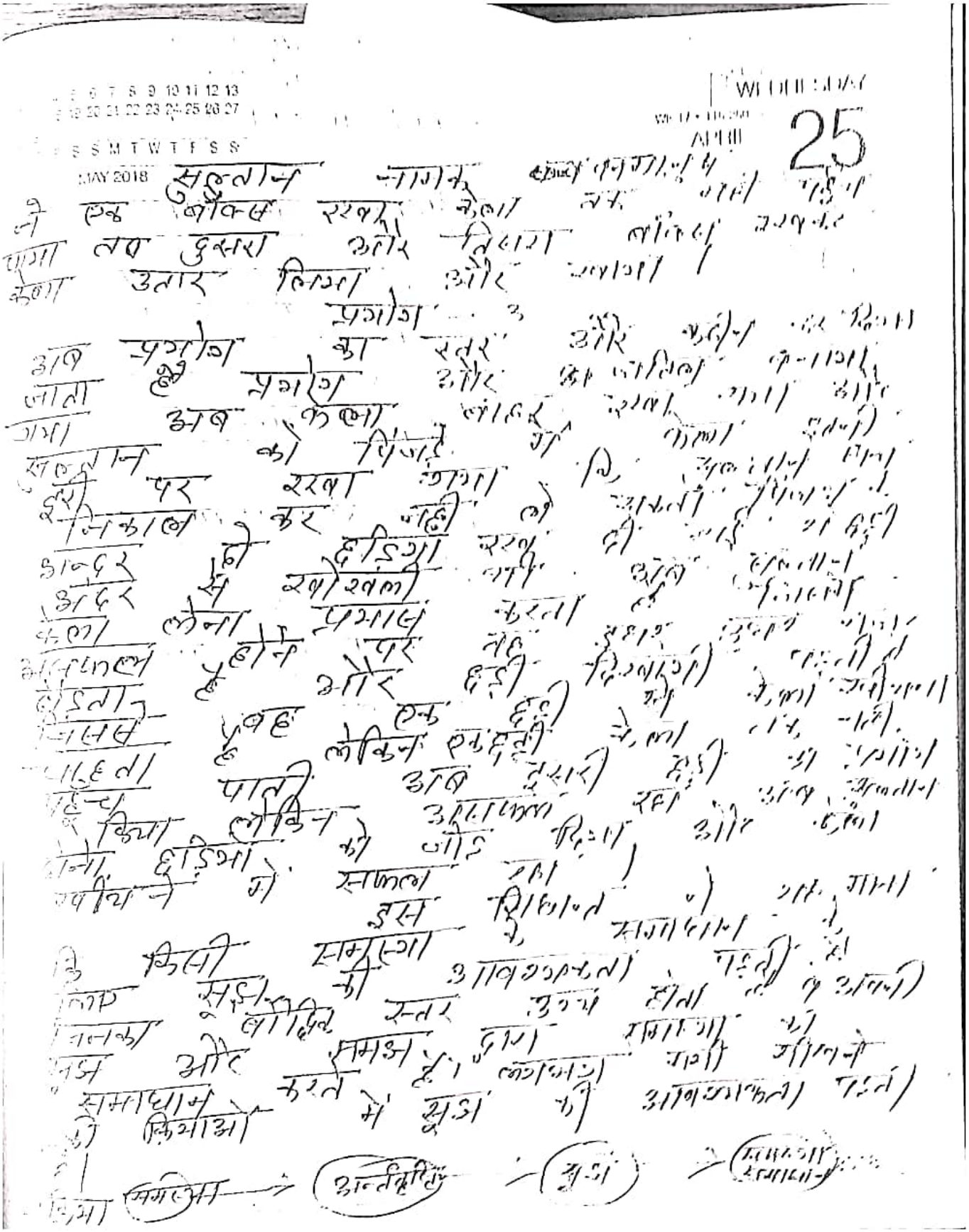

सुल्तान नामक [illegible] नहीं पहुँच
ने एक बॉक्स रखा केला [illegible]
पाया तब दूसरा और तीसरा [illegible]
केला उतार लिया और खाया।

प्रयोग 3

अब प्रयोग का स्तर और [illegible]
जाता है प्रयोग और [illegible]
गया अब केला [illegible]
सुल्तान को [illegible] [illegible]
डंडे पर रखा [illegible]
निकाल कर नहीं तो [illegible]
डालकर को डंडिया रखा [illegible]
अंदर से खोखला [illegible]
केला लेना प्रयास करता [illegible]
असफल होने पर [illegible]
छोड़ता है और [illegible]
पकड़ा एक [illegible]
चाहता है लेकिन [illegible]
पहुँच पाती अब दूसरी [illegible]
किया लेकिन असफल रहा और [illegible]
दोनों डंडिया को जोड़ दिया।
जो सफल रहा।

इस सिद्धान्त [illegible]
कि किसी समस्या [illegible] आवश्यकता पड़ती [illegible]
सूझ का स्तर [illegible] होता [illegible]
बौद्धिक [illegible]
और समझ [illegible]
समाधान करने में सूझ की आवश्यकता पड़ती।
क्रियाओं

समस्या → अन्तर्दृष्टि → सूझ → समस्या समाधान

Scanned with CamScanner

कोहलर का सिद्धान्त (सूझात्मक होने सिद्ध)

प्रयोग - 1

इस सिद्धान्त सूझ द्वारा सीखना, प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त का ही परिणाम है। कोहलर ने वनमानुषों पर अनेक प्रयोग किया और यह जानने की कोशिश किया गया सूझ द्वारा किस प्रकार सीखा जा सकता है इस प्रयोग को करने के लिए कोहलर ने एक वनमानुष को एक कमरे में बन्द कर दिया और उसमें एक पिंजड़ा रखा उस पिंजड़े की छत से केला लटका दिया फिर उन सभी वनमानुष को पिंजड़े में बन्द कर दिया और उसी पिंजड़े में एक बाक्स भी रख दिया वनमानुष का नाम सुल्तान था सुल्तान ने केला को देखा और उसे लेने का प्रयास जब सुल्तान केला लेने में असफल रहा तब उसकी निगाह पिंजड़े में रखे बाक्स पर पड़ी उसने बाक्स को केले के सामने रखा और उसके ऊपर चढ़कर केला तोड़ लेता है और खा लेता है।

प्रयोग - 2

अब कोहलर दूसरा प्रयोग किया और समस्या को और कठिन किया अब केले की ऊंचाई और अधिक किया तथा पिंजड़े कई बाक्स रखे ताकि वनमानुष को केला लेने में अधिक कठिनाई हो अब

INSIGHT THEORY

सूझ का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अवयवीवादियों ने, इसका संबंध मनोविज्ञान अनुभव से है ये गेस्टाल्टवाद समग्रता पर बल देता है। व्यक्ति समग्र अनुभवों के आधार पर नियम बनाता। गेस्टाल्टवादियों में सबसे प्रमुख मनोवैज्ञानिक वुल्फगैंग कोहलर ने सूझ के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

इन गेस्टाल्टवादियों का मानना है कोई व्यक्ति को सीखने की प्रक्रिया में सूझ की आवश्यकता पड़ती है विशेष रूप से उस समय जबकि समस्या के संपूर्ण स्वरूप को समझने की बाधा उपस्थित होती है। सूझ द्वारा सीखने में, हम संपूर्ण परिस्थिति को एक साथ देखते हैं और उसे एक इकाई के रूप में समझते हैं जब प्राणी सम्पूर्ण परिस्थिति को देखता तब समस्या का हल निकलता है। सीखने में सूझ का अर्थ व्यक्ति [illegible] स्थिति को सम्पूर्ण रूप से समझने के योग्य है सूझ वहीं पर कार्य करती है जहाँ पर समस्या का प्रत्यक्षीकरण होता है, कठिनाई के तत्वों को समझने की क्षमता होती है।

इस सिद्धान्त में सूझ या अंतर्दृष्टि शब्द का प्रयोग सबसे पहले कोहलर ने किया इसलिए इसे कोहलर का सिद्धान्त भी कहते हैं। इसके लिए, उन्होंने वनमानुषों पर प्रयोग किया था और इसी आधार पर कोहलर ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।